

शास्त्रीय संगीत में 'गुरु' और अभ्यास का महत्व

Dr. Meenakshi Mahajan

Associate Professor, Department of Music, Fateh Chand College for Women, Hisar, Haryana, India

 [Read the Article Online](#)



सार

शास्त्रीय संगीत में कठिन अभ्यास और गुरु का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः अभ्यास भी एक कला है जिसकी विधि किसी योग्य गुरु से सीखनी चाहिए क्योंकि सही अभ्यास अगर शिक्षार्थी को प्रगति के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित करता है तो गलत अभ्यास पतन की गहरी और अंधेरी खाईयों में धकेल देता है। गुरु में श्रद्धा, गुरु की सेवा करने की प्रवृत्ति, गुरु का आश्रय तथा गुरु में विश्वास इत्यादि बातों का होना नितांत आवश्यक है। संगीत अच्छे गुरु की सेवा से सहज ही साध्य हो जाता है जिसकी गुरु परंपरा श्रेष्ठ नहीं है ऐसा शिक्षार्थी अच्छा कलाकार नहीं बन सकता। क्योंकि संगीत के गूढ़ रहस्यों का भेद अच्छा गुरु विद्यार्थी को बताता है जिसे विद्यार्थी अपने कठिन अभ्यास से सीखता है। विद्यार्थी 'षडज' साधना स्वर और लय के विभिन्न भेदों का वर्षों तक कठिन अभ्यास करके अपनी कला को निखारता है। रागों के 'स्वर लगाव' को तो केवल गुरु ही बता सकता है। भैरवी, असावरी, दरबारी, अडाना में धैवत कोमल होते हुए भी सबका धैवत समान रूप से नहीं गया जाता। कोमल के साथ ही अति कोमल तथा कोमलतम स्वरों के गूढ़ भेद गुरु के आश्रय में रहकर सीखा जा सकता है। इसी प्रकार कण, मीड, खटका, गमक आदि सौंदर्यात्मक तत्वों का गायन अपने कड़े अभ्यास से विद्यार्थी गुरु से सीखता है। नित्य अभ्यास करते-करते गले में लोच, मिठास और दर्द पैदा करता है। इसे ही "गले को माँजना" कहते हैं जो बिना गुरु के सानिध्य के नहीं हो सकता। शास्त्रीय संगीत गुरु मुखी शिक्षा का विषय है यह लिखकर कितना भी समझा और समझाया जाए किंतु इसका सही ज्ञान सच्चे गुरु के चरणों में बैठकर सीखने से ही होता है। केवल पढ़कर करने से कुछ सीमा तक कार्य चल सकता है किंतु पारंगत होने के लिए गुरु चरणों में बैठकर सीखना अत्यंत आवश्यक है। स्वर ताल की आत्मा की परख पहचान जन्म जन्म में होती है। उसे लिखकर देखकर सुनकर पहचाना असंभव है। उसका ज्ञान श्रेष्ठ गुरु के मार्गदर्शन के बाद ही होना संभव है। श्रेष्ठ गुरु का मार्गदर्शन विद्यार्थी का परिश्रम, लगन, साधना एवं ईश्वर की अनुकंपा आदि सब कुछ प्राप्त हो जाए तो सोने पे सुहागा है।

विशेष शब्द- गुरु, अभ्यास, शिक्षा, शास्त्रीय, संगीत

भूमिका

जप या तप का ही दूसरा नाम 'अभ्यास' है। देवता तथा मुनि- महात्माओं की भाषा में इसे "जप - तप" तथा साधारण लोगों की भाषा में 'अभ्यास' कहा जाता है। जिस भाँति जप तथा तप में संयम नियम की अत्यंत आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी विषय के साधक तथा अभ्यासी व्यक्ति को भी पूर्ण रूप से विषय के अनुसार अपनी दिनचर्या को नियमित एवं मन-बुद्धि को संचत रखना पड़ता है।

"मुसलमान संगीतकारों में अभ्यास के संबंध में 'चिल्ला खींचना' की बात बहुत मशहूर है। इसका अर्थ है किसी एक अलंकार तथा तान या राग को कम से कम 40 दिन तक गाना। जब तक यह क्रम जारी रहता था तब तक ना तो कलाकार घर से बाहर निकलता है और ना ही किसी से मिलता था। कहने का अभिप्राय यह है कि अभ्यास या साधना एवं तपस्या मनुष्य को देव तुल्य बनाती है।"

यद्यपि गुरु और अभ्यास का महत्व प्रत्येक विषय में है परंतु संगीत के क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है चित्रकला एवं मूर्ति कला इत्यादि अन्य कला-कृतियाँ प्रत्यक्ष होने के कारण उनकी सहजता और सरलता का अनुभव स्वाभाविक रूप से होता है। परंतु संगीत में मूल तत्व 'नाद' है। इसलिए संगीत कला एवं अन्य कलाओं की साधना तथा अभ्यास में अंतर है।

संगीत क्रियात्मक विद्या है। संगीत अभ्यास एक बहुत बड़ी तपस्या है एवं संगीत साधक एक तपस्वी। सफल संगीत अभ्यासी अपनी संगीत साधना से युग की दुष्प्रवृत्तियों को दूर कर मौलिक रचनाओं तथा अपनी दिव्य प्रतिमा से एक नए युग का निर्माण करता है। संगीत में सफलता एवं सिद्धि प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास के साथ-साथ अनुकूल शिक्षा तथा गुरु के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा की आवश्यकता होती है। शब्दावान लभते ज्ञानमा। मात्र पुस्तकों के अध्ययन से कोई पंडित नहीं बन सकता जो पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक प्रदर्शन द्वारा अपने व्यवहारिक जीवन में अमल करता है वही पंडित की संज्ञा से विभूषित होता है। अभ्यास एक महत्वपूर्ण अर्जन है।

नियमितता, निरंतरता, जागरूकता, एकाग्रता, रचनात्मक कल्पना एवं रचनात्मक प्रकृति, श्रद्धा निष्ठा और लगन सच्चे अभ्यास की मुख्य शर्तें हैं। संगीत अभ्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन ही नहीं है। संगीताभ्यास के द्वारा ईश्वरोपासना एक परम आदर्श उद्देश्य है। एक सच्चा संगीत साधक आत्मा

के शिव - तत्व का आराधक होता है। शिव ही सौंदर्य है, गायन शैली, स्वर सामंजस्य का सौंदर्य, भव्यता और लय की श्रेष्ठता, श्रेष्ठ संगीत अभ्यास के लक्षण है।

संगीत के कलाकार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-एक शास्त्रीय और दूसरे मंचीय। शास्त्रीय कलाकार वह है जो शास्त्रज्ञ हैं। मंचीय कलाकार सामान्यतः शास्त्रीय ज्ञान एवं मंच प्रदर्शन दोनों में सिद्ध होते हैं। अपनी प्रतिष्ठा को मंच पर बरकरार रखने हेतु कलाकार सतत् अभ्यास रत रहते हैं। संगीत को ही अपनी जाति अपना मजहब समझते हुए जो कलाकार विकार मुक्त होकर संगीताभ्यास में लीन रहते हैं। वे निसंदेह मोक्ष के अधिकारी होते हैं। आत्मविश्वास के साथ परिश्रम करने पर परिश्रम सदैव फलदायक होता है।

सुंदर और सुदृढ़ अभ्यास से कला में निखार पैदा होता है। लगातार अभ्यास से कलाकार की सृजनात्मक शक्ति बढ़ती है। यह चिंतन एवं कल्पना में सामंजस्य स्थापित करते हुए नव सृजन का शंखनाद करता है। अभ्यास से संगीत का व्यावहारिक पक्ष सबल होता है। संगीत का सफल अभ्यास वही है जो चित्ताकर्षक स्वर- सृष्टि द्वारा जन चेतना को प्रशस्त करते हुए आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करें एवं सामाजिक उत्थान में सहयोग देकर विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। स्वर-माधुर्य, श्रम एवं सृजनता शक्ति तथा प्रबल आत्मविश्वास एवं गुण ज्ञान का श्रद्धायुक्त अनुसरण सफल साधक के सहज गुण होते हैं।

“संगीत में अभ्यास का संबंध घराने से रहा है। घराना प्रथा में 'गुरु' संगीत के छात्रों के लिए स्कूल का धर्म निभाते आ रहे हैं। घराने गुरु से तालीम प्राप्त कर संगीत का छात्र घराने की सारी विशेषताओं में दक्ष हो जाता है। वह उसके अनुशासन, कायदे और कानून उसकी साधना पद्धति का प्रतीक होता है।”²

संगीत गुरुमुखी शिक्षा है। अतः संगीत के छात्रों को अपने गुरु के सानिध्य में अभ्यासरत रहना होता है। तभी उसकी साधना पूर्ण होती है। गुरु उसकी त्रुटियों पर ध्यान रखता है और उसे अभ्यास के नियमों से परिचित कराता है। “अभ्यास एक अनुशासन है जिसका अनुपालन शिष्य को करना पड़ता है। अभ्यास के लिए अनुकूल वातावरण, अनुकूल प्रोत्साहन, अनुकूल अवसर, अनुकूल आहार एवं अनुकूल शिक्षा परमावश्यक है। अनुकूल शिक्षा एवं अभ्यास के बल पर ही संगीत का छात्र संगीत कुल की मर्यादा रख पाता है। प्रसन्न एवं शुद्ध मुद्रा, शुद्ध वाणी, सरल स्वभाव, शुद्ध एवं एकांत वातावरण, स्वास्थ्य प्रेरणा, अभ्यास में अनुकूल रुचि, दृढ़ संकल्प शक्ति, शुद्ध साधना, अच्छे अभ्यास की आवश्यक शर्तें हैं।”³

संगीत का अभ्यास प्रायः ब्रह्म मुहूर्त में ही सिद्ध होती है क्योंकि इस समय वातावरण स्वच्छ एवं शांत रहता है, जिससे शरीर में ताजगी तथा स्फूर्ति रहती है। कभी-कभी सुखद एवं सुंदर प्राकृतिक वातावरण का अवलोकन भी कला साधना में सहायक सिद्ध होती है। अच्छे अभ्यास के लिए अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है क्योंकि कठिन परिश्रम स्वस्थ शरीर पर ही निर्भर करता है। संगीत का अभ्यास हमारे स्वास्थ्य का संवर्धन भी करता है।

धैर्य पूर्वक एक-एक राग एवं ताल की सतत् साधना से संगीत में वह शक्ति पैदा होती है जो चराचर प्राणियों को प्रभावित करती है। पुराने संगीतज्ञों का कहना है था कि 120 दिनों तक कम से कम लगातार 108 घंटे प्रतिदिन अभ्यास से अपूर्व सिद्धि प्राप्त होती है। संगीत में इस अभ्यास को 'चिल्ला' कहा जाता था। कम से कम तीन चिल्ले पूरे करने पर संगीत का छात्र उस्ताद कहलाने का अधिकारी होता था। 40 दिनों तक 8 घंटे का निरंतर अभ्यास चिल्ला कहलाता था। जो संगीत सिद्धि की दिशा में साबर मंत्र का काम करता है। यदि 12 वर्षों तक एक ही स्वर समूह या एक ही बोल का निष्ठापूर्वक निरंतर अभ्यास किया जाए तो ऐसी कठिन साधना का प्राणियों पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है। यह अभ्यास की ही महिमा थी कि तानसेन के राग दीपक गाने से दीपक जल उठे, मेघमल्हार गाने से वर्षा होने लगी।

अभ्यास करने से पूर्व गुरु का या ईष्ट का ध्यान फलदायक होता है। जितनी गहरी चित्त की एकाग्रता होगी, अभ्यास उतना ही ठोस होगा। दीर्घकालीन अभ्यास, निर्भीकता, गंभीरता एवं गहराई रियाज के प्रभाव है। गलत अभ्यास से परहेज तथा अभ्यास के क्रम में मौलिकता का निर्वाह आवश्यक है। अभ्यास के क्रम में कोमलता, रंजकता एवं शुद्धता पर बल देते हुए स्वरों के सही लगाव, बोलो का सही निकास एवं सरल स्वर समूह के अभ्यास का समर्थक होना चाहिए। अभ्यास एवं कला प्रदर्शन के क्रम में पुनरावृत्ति - दोष, मुद्रा दोष एवं कर्कशता आदि दुर्गुणों से बचना चाहिए। प्रत्येक स्वर संगीत एवं सूक्ष्मता को पूर्ण रूप से साध लेने पर कला में परिपक्वता एवं शुद्धता आती है। अच्छे कलाकारों को सुनने से भी संगीत अभ्यास में भरपूर मदद मिलती है। जिज्ञासा वा सुरुचि, उत्तम कल्पना शक्ति एवं अलौकिक अनुभूति सफल संगीत अभ्यास के प्रमुख सहयोगी तत्व हैं। राग का ताल के भाव पक्ष का ध्यान रखते हुए उसके सूक्ष्म अंगों के उद्घाटन से हमारा संगीत श्रुति मधुर एवं सुखद होता है।

संगीत क्षेत्र में उत्तम कलाकार बनने के लिए बहुत से साधनों की आवश्यकता है। शिक्षार्थी में पूर्व जन्म का सांगीतिक संस्कार होने पर भी उत्तम शिक्षक एवं शिक्षा के अभाव में पूर्व का संस्कार व्यर्थ हो जाता है। इस हेतु अभ्यास के पूर्व सुदृढ़ एवं सहज तथा वैज्ञानिक शिक्षा- दीक्षा का होना नितांत आवश्यक है। इस कारण किसी योग्य गुरु के पास शिक्षा लेने के लिए शिक्षार्थी की यह गुर(भेद) ध्यान में रखना चाहिए कि उनकी गायकी का शीघ्र अनुकरण करने के लिए गुरु के प्रदर्शन करने की रीति तथा ढंग को यथावत अपने में उतारने की कोशिश करनी चाहिए। शिक्षार्थी को नियमित रूप से प्रतिदिन घंटों अभ्यास करना पड़ता है।

अभ्यास के समय अपनी स्वाभाविक आवाज को ही लगाना चाहिए। इससे गले का सौंदर्य नष्ट नहीं होता। ब्रह्म मुहूर्त में षडज अभ्यास जरूर करना चाहिए तथा प्रातः काल अलंकारों के अभ्यास से एक-एक स्वर पर ठहर कर अभ्यास करने से आवाज ठोस तथा मधुर होती है। यह ध्यान रखना चाहिए कि स्वाभाविक ढंग से जहां तक आवाज बिना जोर लगाए पहुंचे, वहीं तक पहुंचानी चाहिए। इस तरह धीरे-धीरे आवाज ऊंचे स्वरों तक पहुंचती जाएगी। अनावश्यक दबाव से आवाज कर्कश और रसहीन हो जाती है।

आरोह - अवरोह का अभ्यास सर्वप्रथम ठाह लय में ही करना चाहिए। स्वरों की पहचान करवाने के लिए शिक्षक को एक स्वर को कई पैटर्न से रखकर अभ्यास करवाना चाहिए। स्वर पहचान के लिए विद्यार्थी को सैकड़ों अलंकार सीखने की बाद कुछ स्वर समूह बोलकर उनको अपने आप गाने के लिए कहना चाहिए। इस विधि से विद्यार्थी में धीरे-धीरे स्वरों की समझ बढ़ने लगती है। तीनों लयों में अभ्यास साथ-साथ चलना चाहिए। मंद, मध्य, तार, सप्तकों का ज्ञान करवाने के लिए उनका मुंह बराबर परिमाण में खुला होना चाहिए। जब विद्यार्थी को स्वर - लय - ताल, आरोह-अवरोह, सप्तक आदि का ज्ञान हो जाए तब राग की तरफ बढ़ना चाहिए। अभ्यास के समय आवाज लगाने की क्रिया अथवा ढंग गुरु को प्रत्यक्ष सामने बैठकर सीखाना चाहिए। संगीत का मूल तत्व स्वर है। इसी पर संगीत का देवत्व निश्चित है। इसके लिए षडज साधना बहुत आवश्यक है। षडज साधना से अन्य 6 स्वर स्वतः ही अपने स्थान से उच्चारित होने लगते हैं। षडज साधना करते समय नित्य के अभ्यास में 15 या 20 मिनट से अधिक षडज पर नहीं रुकना चाहिए। इससे अधिक एक साथ षडज पर रुकने से कंठ में खटके, मुर्की तथा कर्ण का हास होने लगता है। अतः 15 से 20 मिनट तक मध्य षडज पर स्वाभाविक आवाज से रुकने के उपरांत किसी प्रारंभिक राग के षडज पर आगे तथा पीछे वाले स्वरों को लेकर बार-बार षडज पर आकर रुकना चाहिए। षडज से निषाद या निषाद से षडज तथा षडज से ऋषभ तथा ऋषभ से षडज पर आते समय मीड का प्रयोग करना चाहिए। यह अभ्यास गुरु मुख से सामने बैठकर सीखना चाहिए। अच्छी ताने रटने दोहराने से मस्तिष्क बनेगा। अच्छे अभ्यास का फल दही मथने के समान है जिस प्रकार दही को मथने में मक्खन निकलता है उसी तरह संगीत के अभ्यास से मजबूती और आत्मविश्वास बढ़ता है। स्वयं ही नए-नए रास्ते दिखाई देने पड़ते हैं। सूझबूझ अपने आप बढ़ने लगती है। सूझ का मतलब है नई बातों, चीजों का दिमाग में अचानक रोशन हो जाना और बूझ का मतलब है सूझ के नतीजों को समझना। किसी महफिल, कार्यक्रम में रियाज या अभ्यास को पेश नहीं किया जाता। बल्कि अभ्यास से निकला हुआ मक्खन पेश किया जाता है। किताबों में तान का तरीका नहीं दिया होता। बल और पेच जब तक लय में ना हो तब तक तान की जोर नहीं बनती। जब तक आवाज में वजन ना हो तब तक अच्छा गाना या सुथरी तैयारी मुमकिन नहीं। विद्यार्थी को छोटी-छोटी तिहाईयां भी अवश्य बतानी चाहिए। इससे लय मजबूत होती है। लयकारी से गायन वादन में चमत्कारपूर्ण प्रभाव पड़ता है। गायन के विद्यार्थी को तबले का ज्ञान भी कराना बहुत जरूरी है। तबला बजाने से लय- ज्ञान बढ़ता है तथा गाने में लयकारियों के काम में सुविधा रहती है।

गायन शुरू करने से पहले सर्वप्रथम स्थान आलाप का आता है। आलाप के द्वारा ही रागों का स्वरूप दर्शाया जा सकता है। आलाप भावपूर्ण होने चाहिए। स्वर विस्तार में अर्विभाव - तिरोभाव, अल्पत्व- बहुत्व आदि के बारे में विद्यार्थी को बताना चाहिए। विद्यार्थी को राग अभ्यास कराते समय उसके बारीक तत्वों को भी समझा देना चाहिए। थोड़े-थोड़े फर्क से राग अलग-अलग गाए जाते हैं। राग अभ्यास के दौरान गले से गाकर इस बारीक अंतर को विद्यार्थी की समझा देना चाहिए।

आलाप के बाद विभिन्न तानों का अभ्यास कराना चाहिए। तान अभ्यास के समय गुरुजनों को पूरी सतर्कता रखनी चाहिए कि तान स्पष्ट, दानेदार अलग-अलग एवं शुद्ध हो। जहां आलाप हृदय की भावुकता को दर्शाता है वहां ताने बुद्धि व अभ्यास के चमत्कार की परिचायक होती हैं।

अपने गुरु की शिक्षा को अपनाने के बाद उस गायन शैली के अभ्यास की अवधि में किसी दूसरी गायन शैली का अनुकरण थोड़े या अधिक प्रमाण में कदापि नहीं करना चाहिए जब तक अपनाई गई गायन शैली को अभ्यास द्वारा अपना ना बना लिया जाए। अपनाई गई शैली को आत्मसात करने के बाद ही अन्य शैलियों के गुणों को अपनी शैली में थोड़े परिमाण में मिलाने का प्रयत्न उन संगीत अभ्यर्थियों को करना चाहिए जिसमें शैली के गुण दोष को अलग करने का विवेक विद्यमान है। गायन को हृदय स्पर्शी बनाने हेतु आलाप का अभ्यास एवं चिंतन अधिक होना चाहिए। आलाप,

तान इत्यादि का अलग से अभ्यास करने के अतिरिक्त तबले का अभ्यास नित्य करना बहुत आवश्यक है। अभ्यास के समय मंद्र तथा तार सप्तक में सहजता के साथ जहां तक आवाज जाती है वहीं तक गाना चाहिए। जिस स्वर से कम से कम पांच स्वर मंद्र में तथा पांच स्वर तार सप्तक में आवाज आसानी से जा सके, उसी स्वर को अभ्यास के लिए अपना स्वर स्थान बनाना चाहिए। अधिक अभ्यास हो जाने के कारण अथवा अन्य किसी कारण से आवाज बैठी हो तो अभ्यास बंद कर देना चाहिए।

अभ्यास करते समय हाथ और मुख की मुद्राएं बिगड़नी नहीं चाहिए। रियाज अच्छे विचार और अच्छी भावना लेकर भक्ति के रूप में करना चाहिए क्योंकि व्यक्ति के स्वभाव का प्रभाव उसकी कला पर पड़ता है। आलथी-पालथी लगाकर बैठकर रियाज के लिए सबसे बढ़िया आसन माना जाता है। इस प्रकार संगीत- शिक्षा सीखने के लिए योग्य गुरु, समुचित शिक्षा तथा लगन के साथ अभ्यास में तीनों बातें आवश्यक हैं। पहले की शिक्षा और आधुनिक शिक्षा पद्धति एक दूसरे से बिल्कुल अलग है क्योंकि पहले संगीत के क्षेत्र में इने गिने लोग या संगीतजीवी परिवार में ही लगे रहते थे, किंतु आज सभी वर्ग के लोग संगीत के प्रति रुचि रखते हैं। इसके कई कारण हैं, पहले संगीत को त्याग, तपस्या और साधना का विषय मानते थे। राज्य रजवाड़ों से संरक्षित अथवा असंरक्षित लोग अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी इस क्षेत्र में खपा देते थे। किंतु आज संगीत का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, वीडियो, आर्केस्ट्रा आदि में सम्मिलित होने के लिए लोग भाग दौड़ मचाए रहते हैं। पहले संगीत के क्षेत्र में शिक्षा, प्रतिभा और साधना को अधिक महत्व दिया जाता था। किंतु अब यह बातें गौण हो गई हैं, सर्टिफिकेट, डिग्री व डिप्लोमा को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। पहले गुरुजन अपने शिष्यों को बरसों तक एक-एक रचना, एक कायदे, एक-एक स्वर के पीछे लगाए रहते थे। परंतु आज का छात्र 5 या 7 साल कॉलेज, यूनिवर्सिटी तथा अन्य संगीत संस्थानों में डिग्री, डिप्लोमा प्राप्त करके संगीत के हर क्षेत्र में प्रविष्ट होने का इरादा रखता है। इसका महत्वपूर्ण कारण है संगीत जीवन - यापन का एक महत्वपूर्ण साधन माने जाने लगा है। तात्पर्य यह है कि कलाकार बढ़ते जा रहे हैं और संगीत का स्तर गिरता जा रहा है अब समय आ गया है कि कुछ पुराना कुछ नया दोनों का मिला-जुला रूप आधुनिक अभ्यास के तरीकों में शामिल करना पड़ेगा। जिससे कला की शुद्धता, शिक्षा की विविधता और सरलता का दृष्टिकोण बनाकर छात्र-छात्राओं को ऐसी संगीत अभ्यास के तरीकों से सिखाया जा सके जिससे कम से कम संगीत का स्तर ना गिरे।

निष्कर्ष

विद्वानों ने स्वर को शिव और लय को शक्ति की उपमा दी है जो की सत्य है। हिंदू धर्म में देवता की आराधना देवी के साथ होती है जो शक्ति का प्रतीक है। संगीत में लय वह शक्ति है जो स्वर को सप्राण अथवा शक्तिमान रखती है। शिव और शक्ति अर्थात् स्वर और लय यह संगीत के दो आधारभूत स्तंभ हैं जिन पर संगीत का सारा अभ्यास टिका है। स्वर और लय को साधने में ही सारा जीवन लग जाता है जिस प्रकार मानव शरीर में मूलाधार से सहस्रसार तक नाम जप के अभ्यास द्वारा शक्ति पहुंचती है, अपने शिव से मिलने तब आत्मज्ञान हो जाता है। इसी प्रकार स्वर और लय के अभ्यास से जो कि जीवन पर्याप्त चलता है। व्यक्ति को अनहद नाद सुनाई देने लगते हैं। प्राचीन संतों ने मानव शरीर को 'गात्र वीणा' की संज्ञा दी है। गात्रवीणा की स्थापना में 7 स्वरों का स्थान 7 चक्रों पर रखा गया। प्रत्येक स्वर की अपनी अलग-अलग साधनाएं थीं और स्वरों के माध्यम से संगीतज्ञ मूलाधार से सहस्रसार की यात्रा करके मोक्ष प्राप्ति करता था। संगीत का प्राचीन काल में उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति था। इसलिए शास्त्रीय संगीत की प्राचीन प्रणाली में संगीत के व्यावहारिक ज्ञान पर गुरु का अधिक जोर होता था। इसी प्राचीन प्रणाली का संबंध घरानेदार शिक्षा थी। जहां विद्यार्थी अपना आधा जीवन गुरु के सान्निध्य में बिताकर गुरु के कठिन आज्ञाओं का पालन करते हुए स्वर, श्रुति, लय, स्वर लगाव, विभिन्न गायन शैलियों के भेद को बहुत बारीकी से सीखता था तब विद्यार्थी का उद्देश्य भी अच्छा उच्च श्रेणी का कलाकार बनने का होता था। किंतु आज का विद्यार्थी समय की रफ्तार के साथ चल रहा है। वह थोड़े समय में बहुत पाना चाहता है, डिग्रियां पानी की होड़ है। जीविका का साधन बनाना चाहता है। वह 6 माह या एकवर्षीय शिक्षा के बाद ही रेडियो पर गाने की लालसा रखता है। इसलिए आज शास्त्रीय संगीत का स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

References

- 1 Garg, Prabhulal, Sangeet Sikar, Pri-216, Hindi
- 2 Garg, Prabhulal, Sangeet Sikar, Pri-214, Hindi
- 3 Vastav, Jagdishchandra, Sangeet Parveen, pri-157, Hindi